डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया

B. A. Part-1
M. I. L. Hindi

Date- 04-02-2022.

# पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी-माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव
पर हे हरि, डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावे वीर अनेक।

— माखनलाल चतुर्वेदी

संदर्भ-प्रसंग :—
प्रस्तुत कविता कवि माखनलाल चतुर्वेदी की श्रेष्ठ कविताओं में से एक है। 'पुष्प की अभिलाषा' कविता राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। यह कविता हमारे भीतर राष्ट्र के प्रति बलिदान और सेवा की भावना भर देती है। जब स्वतंत्रता की क्रांति, आजादी पाने की आग सब के हृदय में दुबकी हुई थी ऐसे में इस कविता के माध्यम से उस राष्ट्रीय-संवेदना की लौ को दहकाया गया। कवि ने एक पुष्प के

Scanned by CamScanner

माध्यम से ये सीख दी कि आजादी के लिए लड़ने वाले वीर की शहादत व्यर्थ नहीं जाएगी, एक फूल की भी इच्छा भी उन वीरों के पद तले बिछ जाने की है जो मातृभूमि पर अपनी जान न्यौछावर करने जा रहे हैं।

व्याख्या :—

एक फूल से जब माली द्वारा द्वारा पूछा जाता है कि हे पुष्प! बता तेरी अभिलाषा क्या है तो पुष्प की अभिलाषा माखनलाल चतुर्वेदी के शब्दों में व्यक्त होती है कि हे वनमाली! मेरी ये चाहत नहीं कि मैं किसी सुन्दरी के बालों का गजरा बनूँ, मेरी इच्छा नहीं है कि मैं किसी प्रेमी युगलों के माला में सज उनकी सुंदरता बढ़ाऊँ, मेरी यह भी इच्छा नहीं है कि मैं किसी सम्राट के शव पर डाला जाऊँ, मैं देवों के सर पर सजकर अपने भाग्य पर इठलाऊँ मेरी ये तमन्ना नहीं। हे वनमाली! मुझे तुम तोड़कर उस पथ पर फेंक देना जहाँ से देश की रक्षा को अपने प्राण की आहुति देने हमारे वीर जा रहे हो! पुष्प उन शूरवीरों के पैरो तले आकर गर्व और सम्मान से अभिभूत हो जाएगा और अपना जीवन सफल समझेगा।

Scanned by CamScanner

विशेष :-

जब हमारे भारत देश के स्वतंत्रता सैनानी अंग्रेजों से भारत की आजादी के लिए लड़ाई लड़ रहे थे तब उनको और भारत की जनता को लड़ाई में सहयोग देने के प्रोत्साहन के लिए इस कविता की रचना की थी। यह कविता देश पर न्योछावर हो जाने वाले वीरों के प्रति सम्मान और देशभक्ति का सही तथा सर्वोपरी स्थान बताती है।

Scanned by CamScanner